# हिंदी में रोजगार सृजन के अवसर

**प्रोफेसर मधु सिंगला**
अग्रवाल महाविद्यालय बल्लभगढ़ फरीदाबाद

**सारांश**

देव भाषा संस्कृत के गर्भ से निकली व्यापक, वैज्ञानिकता पूर्ण भाषा हिंदी, भारत की राजभाषा के पद पर 14 सितंबर 1949 को आसीन हुई। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एक मात्र भाषा अंग्रेजी का वर्चस्व व्यापक क्षेत्र में फैला है परंतु अपनी विशेषता के कारण आज हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर के चरमोत्कर्ष पर है। हिंदी भाषा में रोजगार के असंख्य अवसर न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं। प्रमुख रूप से हिंदी में रोजगार अध्यापन के क्षेत्र में, पत्रकारिता, समाचार वाचक और संपादक के रूप में वैश्विक स्तर पर, अनुवादक के रूप में, रेडियो जॉकी, हिंदी टाइपिंग में, राजभाषा अधिकारी, स्वतंत्र लेखन, तकनीकी व संचार माध्यमों में विशेष रूप से है। इसके अतिरिक्त रेलवे विभाग, सरकारी बैंकों, न्यायलया में लेखा अधिकारी तथा कई सरकारी व निजी संस्थानों में हिंदी में रोजगार का क्षेत्र दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। इंटरनेट पर ब्लॉग, सामाजिक मीडिया, ट्विटर तथा अन्य क्षेत्रों में हिंदी का राज्य साम्राज्य के परिवर्तित होता जा रहा है। आवश्यक है कि न केवल विद्यार्थी वर्ग बल्कि अभिभावक भी हिंदी क्षेत्र के असंख्य रोजगारों के प्रति ध्यान रखें। कुंठित होने की अपेक्षा मातृभाषा के प्रति समर्पितत रहे और प्रतियोगिता परीक्षाओं को उर्त्तीर्ण कर रोजगार प्राप्त करें।

**प्रस्तावना :**

भाषा मानव के बहुमुखी प्रयोजनों को सिद्ध करती भाषा को विद्वत समाज सृजनात्मक व सामाजिक शक्ति के रूप में देखता है। प्रसिद्ध साहित्यकार निर्मल वर्मा का भाषा के संबंध में कथन है ''भाषा संप्रेषण का माध्यम होने के साथ-साथ संस्कृति की वाहक भी होती है। किसी देश की संस्कृति ऐतिहासिक झंझावतों द्वारा शत् विक्षत भले ही हो जाए उसका सत्य और सातत्य उसकी भाषा में बचा रहता है।'' देव भाषा अर्थात् आर्य भाषा का प्राचीनतम् रूप वैदिक संस्कृत जिसमें वेदों, उपनिषदों, संहिताओं का सृजन हुआ है। समय अनुसार इसके स्वरूप में परिवर्तन लौकिक संस्कृत के रूप में हुआ। जिसमें रामायण व महाभारत जैसे महान ग्रंथों की रचना हुई। परिवर्तित होकर भाषा पालि के रूप में सामने आई। जिसका प्रयोग महात्मा बुद्ध के उपदेशों में प्राप्त होता है। पालि भाषा के परिवर्तित स्वरूप को प्राकृत का नाम दिया गया है।'' राजशेखर ने संस्कृत वाणी को सुनने योग्य, प्राकृत को स्वभावत: मधुर, अपभ्रंश को सुभव्य और मूल भाषा का सरस कहा है। इन विशेषणों का साभिप्राय प्रयोग विचारने योग्य है। वह यह भी कहते हैं कि कोई बात एक भाषा में कहने से अच्छी लगती है। तो कोई दूसरी में, कोई दो-तीन में। उसने काव्य पुरुष का शरीर शब्द और अर्थ को बनाया है। जिसमें संस्कृत को मुख और प्राकृत को बाहु, अपभ्रंश को जंघ्नय स्थल, पैशाच को पैर और मिश्र को उरू कहा है। सातवीं से ग्यारहवीं तक अपभ्रंश की प्रधानता रही और वह पुरानी हिंदी में परिणत हो गई।2 दो सौ वर्षों तक भारत अंग्रेजी राज की गुलामी को झेलता रहा। जिस का सर्वाधिक प्रभाव भारत की शिक्षा पद्धति पर था। प्रशासनिक कार्यों के लिए भारतीयों को अंग्रेज़ी भाषा का ज्ञान दिया जाता था। महाविद्यालय तथा संस्थानों की स्थापना अंग्रेजी को बढ़ावा देने के लिए खोले गए। अंग्रेजी की व्यापकता पहले से ही देश विदेश में इतनी अधिक थी कि केवल अंग्रेजी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया। अंतर्राष्ट्रीय समझोता व व्यापारिक संबंधों को बनाए रखने के लिए अंग्रेजी अनिवार्य हो गई। द्रविड़ भाषा परिवार भी इसके समर्थक रहे। आधुनिकता और वैज्ञानिक प्रगति की गति ने मातृभाषा के प्रति लगाव को कम कर दिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी अंग्रेजी का प्रभाव कम न हुआ हालांकि विद्वत समाज हमेशा अपनी मातृभाषा को बढ़ाने के लिए साहित्य के माध्यम से प्रयासरत रहा। समय अनुसार आजादी के बाद 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिय गया और अंग्रेजी को सहायक भाषा के रूप में माना गया। 1963 के राजभाषा अधिनियम के अनुसार 15 वर्षों के लिए अंग्रेजी को दूसरी सहायक भाषा के रूप में

ISBN: 978-81-954645-0-0

रखा गया था परंतु दुर्भाग्यवश स्थिति आज भी ज्यों की त्यों है।

भाषायी प्रकृति व समृद्धता के दृष्टिकोण से अंग्रेजी में हिंदी दोनों की तुलना पर विचार किया जाए तो

1. अंग्रेजी में वर्णों की संख्या केवल 26 है जिसमें 5 स्वर और 21 व्यंजन है।
2. प्रारंभ से ही अंग्रेजी का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत रहा है जिसके कारण वह वैज्ञानिक प्रगति की भाषा बन गयी ।
3. अंग्रजी से काफी शब्द अन्य भाषाओं में जाने के कारण कुछ भाषायें जैसे फ्रेंच इत्यादि सीखने में कठिनाई नहीं आती।
4. अंग्रेजी के शब्दों में उच्चारण में काफी समानता है जैसे :

   Dear - deer, Ate - eight etc
5. शब्दों में प्रथम वर्ण का गूंगा होना अर्थात् साइलेंट होना जैसे :-

   Psychology, Knife etc ...
6. अंग्रेजी में शब्दों की संख्या हिंदी के शब्दों की तुलना में लगभग आधी है।
7. अंग्रेजी की लिपि वैज्ञानिकता पूर्ण नहीं है।
8. अंग्रेजी में अन्य रिश्तों के लिए uncle या aunt शब्द का प्रयोग किया जाता है।

इसके विपरीत यदि हिंदी के विषय में बात की जाए तो :-

1. संस्कृत के गर्भ से निकलने के कारण व्याकरणिक नियमों में कोई त्रुटि नहीं है।
2. हिंदी में वर्णों की संख्या 52 है। जिसमें 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं। जिन्हें उच्चारण की विशेषताओं के अनुसार रखा गया है।
3. सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि होने के कारण इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित लिपि चिन्ह है।
4. हिंदी के शब्दकोश में लगभग 11 लाख शब्दों का होना माना जाता है।
5. हिंदी में लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है अर्थात गूंगे वर्णों का कोई स्थान नहीं है।
6. हिंदी में निर्जीव संज्ञा के लिए लिंग का निर्धारण होता है।
7. व्यवहारिक भाषा होने के कारण हिंदी में प्रत्येक रिश्ते के लिए अलतग शब्द उच्चारित किया जाता है।
8. विश्व में लगभग 175 विश्वविद्यालयों में आज हिंदी सिखाई जा रही है।
9. व्यापकता, वैज्ञानिकता और व्यवस्थित होने के कारण हिंदी आज भारत के अतिरिक्त अमेरिका, कनाडा, मॉरेशियस, रूस, नेपाल तथा अन्य कई देशों में बोली व समझी जाने लगी है।
10. वर्तमान का सबसे ज्यादा उपयोग किया जाने वाला सर्च इंजन गूगल हिंदी को अपनी सेवाओं का माध्यम बना रहा है।
11. सोशल मीडिया, कंप्यूटर और इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग दिनोंदिन तेजी से बढ़ रहा है।
12. अनुमानत: 490 मिलियन लोग विश्व में हिंदी समझते हैं और बोल सकते हैं।

यहां पर ध्यातव्य है कि भाषाई तुलना का आधार अंग्रेजी को नीचा दिखाना नहीं है। प्रत्येक भाषा की अपनी गरिमा और अपना स्तर है।

''जब कोई भाषा जींत, स्वायत्त, मानक, उन्नत और समृद्ध होकर समूचे राष्ट्र अथवा देश में सार्वजनिक संप्रेक्षण व्यवस्था और कार्य व्यापार में प्रयुक्त होने लगती है, बहुभाषी राष्ट्र में अंतर प्रांतीय मध्यवर्तिनी भाषा के रूप में विभिन्न भाषा, भाषा समुदायों के बीच बृहत्तर स्तर पर संपर्क भाषा की भूमिका निभाती है तथा केंद्रीय एवं राज्य सरकारों में सरकारी कार्यों और पत्र व्यवहार में प्रयुक्त होने लगती है तो वह राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में जन्म लेती है।3 राष्ट्रीयता की प्रतीक हिंदी की अजस्त्र निर्मल धारा में अन्य भाषाओं के बोलियों को स्तोतिस्वनि रूप है। संपूर्ण विश्व में बोली और समझे जाने वाली दूसरी भाषा हिंदी है। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण, व्यापकता, वैश्वीकरण, वैज्ञानिक प्रगति व अंतर्राष्ट्रीय

भाषा होने के कारण अंग्रेजी का प्रभाव अत्यधिक है। सामान्य धारणा है कि अंग्रेजी माध्यम द्वारा रोजगार के अवसरों की प्राप्ति सरलता से हो जाती है और आजकल अभिभावक भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देना प्राथमिकता समझते हैं। बहुभाषी होना अच्छी बात है इससे बौद्धिक क्षमता का विकास होता है और मानसिक रूप से भी आत्मविश्वास की भावना प्रबल होती है। अन्य देशों के साहित्य एवं संस्कृति को जानकर उससे प्रेरणा लेना अच्छा है परंतु मातृभाषा नैतिक मूल्यों की परिचायक होती है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के अनुसार ''अंग्रेजी के विषय में लोगों की कुछ भा भावना हो पर मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। हिंदी की पुस्तकें लिखकर और हिंदी बोलकर भारत के अधिकांश भाग को निश्चय ही लाभ हो सकता है। यदि हम देश में बंगला और अंग्रेजी जाने वालों की संख्या का पता चला है तो हमेशा प्रकट हो जाएगा कि वह कितनी न्यून है।''4 इसलिए यदि प्राथमिक स्तर से ही हम मातृभाषा के प्रति उदासीन हो जाएंगे तो एक दिन अपनी संस्कृति को खो बैंठेंगे। वर्तमान परिपेक्ष्य में हिंदी की महत्ता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। आवश्यक है कि हिंदी की बढ़ती महता और भविष्य में होने वाले रोजगार के उच्च अवसरों के विषय में युवा पीढ़ी को बताया जाए और उनके मन में पल रही हीन भावना को निकाला जाए। हिंदी में रोजगार के उच्च विचारों

### 1. अध्यापन के क्षेत्र में :

हिंदी अध्यापन के क्षेत्र में रोजगार हमेशा से ही बेहतरीन विकल्प के रूप में रहता है। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक अध्यापन का रोजगार योग्यता अनुसार प्राप्त किया जा सकता है। स्नातक करने के पश्चात बी.एड करके विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षाओं जैसे एच.टेट, सी.टेट, डी.एल.एड को उत्तीर्ण करने के पश्चात सरकारी विद्यालयों या किसी निजी विद्यालय में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। स्नातकोत्तर के पश्चात एच.टेट के उच्च स्तर अर्थात् पीजीटी स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण करके उच्च कक्षाओं में रोजगार संभव है। इसके अतिरिक्त हिंदी के स्नातकोतर करने के पश्चात राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) की परीक्षा किरण करके प्रवक्ता के रूप में रोजगार प्राप्ति हो सकती है। इसी प्रकार जूनियर रिसर्च फैलोशिप (जआरएफ) के पश्चात शोध कार्य के लिए अर्थात् पीएचडी के लिए सरकार द्वारा पर्याप्त धनराशि दिए जाने का प्रावधान होता है जिसके द्वारा विद्यार्थी आर्थिक रूप से संपन्न होकर शोध कार्य कर सकता है। इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने के पश्चात सहायक प्रवक्ता के पद के लिए विद्यार्थी योग्य हो जाता है। उच्च कक्षाओं के अध्यापन हेतु स्नातकोत्तर के पश्चात एम.एड करके भी प्रवक्ता बना जा सकता है साथ ही आर्थिक स्तर अनुसार विद्यार्थी निजी शिक्षा संस्थान अर्थात् कोचिंग सेंटर भी खोल सकता है।

### 2. पत्रकारिता में रोजगार :

पत्रकारिता का क्षेत्र जितना व्यापक और विस्तृत है उतना ही आकर्षक, रोचक और चुनौतीपूर्ण है। वाक् चातुर्य एवं प्रश्न कौशल की प्रतिभा लिए युवा यदि भाषा पर पकड़ मजबूत बना ले तो निश्चय ही वह सफल पत्रकार बन सकता है। अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा पत्रकारित में कोर्स करवाए जा रहे हैं। भारत जैसे विशाल हिंदी भाषी राष्ट्र में ज्यादातर समाचार पत्र, पत्रिकाएं, समाचार चैनल हिंदी भाषा के हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र की व्यापकता इतनी अधिक है कि किसी भी क्षेत्र में पकड़ बना ली जाए तो स्थानीय पत्रकार से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक के पत्रकार के पद को प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पत्रकारिता में निम्न वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक के सामान्य व्यक्ति से लेकर उद्योगपति और नेताओं तक का साक्षात्कार हिंदी में लिया जाता है। इसके द्वारा ज्ञानार्जन, अनुभव, वाणी की प्रखरता के कारण समाचार वाचक के रूप में भी रोजगार की प्राप्ति संभव है।

### 3. हिंदी में अनुवादक

पत्रकारिता के समान ही अनुवाद का क्षेत्र वर्तमान में और सीमित हो गया है। वैश्विक स्तर पर आजकल जिस तेजी से हिंदी की मांग बढ़ रही है। अनेक राजनीतिक संस्थाएं, पर्यटन संस्थान, देशी-विदेशी मीडिया संस्थान और न जाने कितने ही होटलों तक में खासकर विदेशों में तो हिंदी अनुवादक की भारी मांग है।'' आखिरकार अनुवाद ही इस अनुशासन की आधार पीठिका है और आज के संदर्भ में सांस्कृतिक अध्ययन के लिए अंतर्गत अनुवाद ने एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।5 साहित्य लेखन में अनुवादक को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न कवि सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा

कार्यशालाओं में अनुवादकों को आर्थिक व सामाजिक रूप से सम्मानित किया जाता है। इतना ही नहीं अनेक विश्वविद्यालयों में भी अनुवादक की मांग हमेशा बनी रहती है। अनेक सरकारी विभागों में अनुवादक अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। अनुवाद के क्षेत्र में डिप्लोमा दिल्ली विश्वविद्यालय से भी किया जा सकता है। यह 1 से 2 वर्ष तक का होता है। विद्यार्थी अपनी रुचि अनुसार भाषा का चुनाव कर अनुवादक के रूप में रोजगार प्राप्त कर सकता है।

**4. टाइपिंग के क्षेत्र में रोजगार :**

अंग्रेजी के अपेक्षा हिंदी में कंप्यूटर पर टाइपिंग करने वालों की संख्या काफी काम है। क्योंकि हिंदी दिनोंदिन मांग में है अत: विद्यार्थी कंप्यूटर के सामान्य ज्ञान और अभ्यास द्वारा हिंदी टाइपिंग सीख कर स्वयं का कोई छोटा संस्थान भी खोल सकता है या फिर अन्य किसी संस्थान में अपनी पढ़ाई के साथ-साथ रोजगार भी प्राप्त कर सकता है।

**5. रेडियो जॉकी के क्षेत्र में :**

रेडियो प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक आयु वर्ग के बीच मनोरंजन का और ज्ञान का सशक्त माध्यम रहा है विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की प्रस्तुति अनेक रेडियो जॉकी द्वारा प्रस्तुत की जाती है। इसके लिये विद्यार्थी को किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि रेडियो में हमेशा सरल हिंदी में प्रस्तुतिकरण होता है इसलिए आवश्यक है कि विद्यार्थी में सहज वाणी माधुर्य, भाषा प्रवाहमयता और बातचीत हो आकर्षक अंदाज के साथ-साथ अपने कार्यक्रम अनुसार अपने क्षेत्र की पूर्ण जानकारी हो। रेडियो जॉकी के रोजगार को अपनाते हुए विद्यार्थी अन्य कोई कोर्स व शिक्षा साथ में ग्रहण कर सकता है। रेडियो पर ज्यादातर कार्यक्रम हिंदी में प्रसारित होते हैं अत: हिंदी में रेडियो जॉकी के क्षेत्र में रोजगारी की संभावना बहुत अच्छी है। रेडियो मिर्ची के प्रसिद्ध जॉकी नवेद और ऑल इंडिया रेडियो पर अमीन सयानी का नाम भारत भर में प्रसिद्ध है।

**6. रचनात्मक लेखन में रोजगार :**

विद्यार्थी अपनी सृजनात्मक रुचि के अनुसार लेखन कार्य कर के भी रोजगार प्राप्त कर सकता है। वर्तमान में विद्यार्थी सोशल साईट के माध्यम से अपने लेखन के द्वारा भी पैसा कमा सकता है। किसी साहित्यिक विधा में निपुणता आने पर प्रकाशक आपको धनराशि भी देता है। इसके अतिरिक्त भारतीय हिंदी सिनेमा जगत में जिस में टीवी धारावाहिक, फिल्मों के लिए स्क्रिप्ट लिखना, गीत लिखना, संवाद लिखना इत्यादि लेखन हिंदी में करके बहुत अच्छे रोजगार के अवसर प्राप्त किये जा सकते हैं। इसके लिए हिंदी शब्दावली का ज्ञान होना परमावश्यक है। लेखन के शुरूआती समय में किसी संस्था या बैनर के नियमों के अनुसार अनुबंध पर भी कार्य किया जा सकता है। अनुभव और दक्ष हो जाने पर घर बैठ कर स्वतंत्र लेखन द्वारा भी धनार्जन किया जा सकता है।

**7. वैश्विक स्तर पर हिंदी में रोजगार :**

देखा जा रहा है कि विदेशों में हिंदी की मांग काफी बढ़ गई है। इसके लिए विदेशों में अनेक हिंदी अध्ययन के केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। भारत तीसरी बड़ी शक्ति के रूप में उभर रहा है। अत: भारत से अन्य देशों के संबंधों ने हिंदी के प्रति विदेशों में रुचि जागृत कर दी है। अमेरिका के कुछ विद्यालयों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी को अध्ययन का विषय बनाया गया है। हिंदी से स्नातकोत्तर और पीएचडी के पश्चात विदेशों में रोजगार के सुनहरे अवसर उपलब्ध हैं। वैश्विक स्तर के प्रकाशक हिंदी भाषा की किताबों के प्रकाशन को अत्यधिक महत्व देते हैं। ऐसे में संपादक, लेखक, अनुवादक, प्रूफ रीडर, संशोधक इत्यादि क्षेत्र में रोजगार के अनगनित अवसर मौजूद हैं। ''बहुसंस्कृतिवाद तथा सामाजिक अध्ययन के लिए विभिन्न भाषाओं के साहित्य के अनुवाद की आवश्यकता है और उच्च शिक्षा में इन अनुभवों के प्रयोग के लिए तुलनात्मक साहित्य का ज्ञान नितांत जरूरी है। विशेष रूप से भूमण्डलीकरण के इस युग में विभिन्न भाषाओं और संस्कृति के विनियोजन, समांगिकरण और सहयोजन के चलते यह और भी आवश्यक हो जाता है कि अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी संस्कृति की रचना की जाए।''

**8. संपादन के क्षेत्र में रोजगार :**

भारत में अधिकांश समाचार पत्र और पत्रिकाएं हिंदी भाषा में छपते हैं और विषय क्षेत्र के कारण संपादक अकेला सभी कार्य नहीं कर सकता अत: हिंदी में विशेष पकड़ रखने वाले प्रशिक्षण लेकर प्रधान संपादक, संयुक्त संपादक, सहायक संपादक, वरिष्ठ सहायक संपादक, उप संपादक, मुख्य संपादक, समाचार संपादक के रूप में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। इसके द्वारा व्यक्ति लेखन कार्य में सिद्धहस्त हो जाता है।

**9. तकनीकी के क्षेत्र में रोजगार :**

जिस प्रकार से आज इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है गूगल जैसे सर्च इंजन ने हिंदी को विशेष महत्व देना प्रारंभ कर दिया है। इंटरनेट से हिंदी की अनेकानेक वेबसाइट और असीमित सुविधाएं उपलब्ध है। यूनिकोड द्वारा हिंदी का क्षेत्र का स्वरूप बदल रहा है।'' अमेरिका सरकार के साथ-साथ कंप्यूटर किंग कहे जाने वाले बिल गेट्स भी हिंदी के उपयोग में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। गूगल के मुख्य अधिकारियों का मानना है कि भविष्य में केवल स्पेनिश ही नहीं बल्कि अंग्रेजी में चीनी भाषा के साथ हिंदी ही इंटरनेट की प्रमुख भाषा होगी। 7 तकनीकी क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा देने के लिए 14 सितंबर 2019 को राजभाषा विज्ञान भवन नई दिल्ली में ई-महाशब्दकोष ऐप एवं ई-सरल हिंदी वाक्य कोश का विमोचन किया गया। इनसे केन्द्र सरकार के कार्मिक हिंदी भाषा का ज्ञान बढ़ाकर अपना कार्य हिंदी में करने में अधिक सक्षम होंगे। इन तकनीकी टूल्स का विस्तार व परिष्कार आगे भी जारी रहेगा।

**10. राजभाषा अधिकारी :**

1981 में विभिन्न मंत्रालयों, विभागों के पदाधिकारियों को वेतन, सेवा, पदोन्नति की दृष्टि से समता प्रदान करने के लिए केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा को गठित किया गया। इसके अंतर्गत केवल अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा विभाग तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से स्नातकोत्तर किए हुए और हिंदी विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त किए विद्यार्थी सरकारी पद प्राप्त कर सकते हैं।

**11. अन्य रोजगार के क्षेत्र :**

इसके अंतर्गत रेलवे विभाग, न्यायालय विभाग के लेखाधिकारी, सरकारी बैंक तथा अन्य सरकारी व निजी संस्थाओं में हिंदी भाषी व्यक्ति रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। विद्याथी कक्षा 12 के पश्चात, स्नातक, स्नातकोत्तर करने के पश्चात विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। निजी संस्थानों व सरकारी संस्थानों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार संबंधित कोर्स करवाए जाते हैं। आवश्यक है कि विद्यार्थी स्वयं को इस विषय में जागरूक रखें और अपनी मातृभाषा के प्रति समर्पित रहे।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. भाषा भारती, जनवरी 2017, ISSN 2321-5704, पृष्ठ संख्या 7
2. संपादक डॉक्टर मनोहर लाल, गुलेरी साहित्यलोक, पृष्ठ संख्या 263
3. राजभाषा भारती, भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग, वर्ष 41, संयुक्त अंक 157 पृष्ठ संख्या 25
4. आचार्य पंडित किशोरी दास वाजपेयी शास्त्री, जनवाणी प्रकाशन, 161/1, हरिसन रोड कोलकाता
7. प्रस्तावना
5. इंद्रनाथ चौधरी, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करा-आमुख 10
6. वही आामुख-9
7. राजभाषा भारती, भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, वर्ष 41, संयुक्त अंक 157 पृष्ठ संख्या 39
8. वही, पृष्ठ संख्या 9